केला

खाद एवं उर्वरण

उर्वरक खुराक मिट्टी की उर्वरता और फसल के लिए प्रयुक्त जैविक खाद की राशि पर निर्भर करता है। अच्छी फसल के लिए, मिट्टी में अच्छी तरह से अपघटित एफवाईएम को 40-50 टन / हेक्टेयर में शमिल किया जाता है। अधिकतम उपज के लिए अनुशंसित उर्वरक खुराक इस प्रकार से हैं :

किस्में	**उर्वरकों की मात्रा (ग्रा0/पोधा)**								
	3 महीने			5 महीने			7 महीने		
	यूरिया	एसएसपी	एमओपी	यूरिया	एसएसपी	एमओपी	यूरिया	एसएसपी	एमओपी
पूवन, रसथाली व करपूरावल्ली	140	155	130	230	155	320	90	---	175
डी कैवंडिस, रोबुस्ता व नेनड्रन	15	155	130	250	105	320	150	---	225
अन्य किस्में	110	110	130	155	110	300	90	---	160

(स्त्रोत : एनआरसी केला)

टिशु कल्चर केला हेतु उर्वरक खुराक नीचे दी गई हैं -

पौधारोपण के बाद दिनों	**उर्वरक खुराक (ग्रा0/पौधा)**		
	यूरिया / अमोनियम सल्फेट	एसएसपी	एमओपी
30	45/100	125	50
75	90/195	125	85
110	110/245	125	85
150	110/245	125	100
180	90/195	125	100
एट बन्च एमरजैन्स	--/--	----	85

पोषक तत्वों की कमी :

नाइट्रोजन

सभी उम्र की पत्तियों के रंग पीले हरे हो जाते हैं। देखने में मध्य रिब्स, पर्णवृन्त तथा पत्ती शीथ लाल गुलाबी और रोजेट हो जाते हैा हल्की जड़ विकास वाले वृक्षारोपणों में इस तरह के लक्षण दिखाई देते हैं। वजन वाले गुच्छे और फल गुणवत्ता प्रभावित होती है।

नियंत्रण : सिंचाई द्वारा अपनाई गई यूरिया की प्रयुक्तता (300ग्रा0/ पौधा) की सिफारिश की गई है।

फास्फोरस

पौधे हल्की जड़ विकास के साथ अवरुद्ध विकास को दर्शाते हैं। पुरानी पत्तिया दन्त सीमांत क्लोरज, पत्तियों के कर्लिंग, पर्णवृन्त और छोटी पत्तियों के नीले हरे रंग के टूटने को दर्शाता है।

नियंत्रण : सिंचाई द्वारा अपनाई गई डीएपी की प्रयुक्तता (50ग्रा0/पौधा) की सिफारिश की गई है।

पोटैशियम

इसकी कमी होने वाले लक्ष्णों में पुराने पत्तियों का नारंगी पीला रंग, मार्जिन के साथ स्कोरचिंग, कुल पत्ती क्षेत्र में कमी, मिडरिब की करविंग आदि शामिल है। पत्तियों की चोकिंग से फूल आने में देरी होती है जिसकी वजह से फसल और गुणवत्ता में कमी आती है।

नियंत्रण : पत्तियों पर पोटेशियम सल्फेट सोलूयशन छिड़काव (1%) की सिफारिश की गई है।

कैल्शियम:

इसकी कमी होने वाले लक्षणों में पत्ती पटल (कील पत्ता) का अभाव, सीमांत पत्ती की विकृति और नसों का उमड़ना शमिल है।

नियंत्रण : सिंचाई द्वारा अपनाई गई नींबू की प्रयुक्तता (50ग्रा0/ पौधा) की सिफारिश की गई है।

मैगनीशियम:

मिडब्लेड और मिडरिब भाग में पीली विवर्णता को देखा जाता है हालांकि पत्ती का मार्जिन हरा ही रहता है। पर्णवृन्त के बैंगनी मोटलिंग, सीमांत गल जाना और पैसयूडोसटम से पत्ती शीथ की जुदाई को भी देखा जाता है।

नियंत्रण: सिंचाई द्वारा अपनाई गई मैगनेशियम सल्फेट की प्रयुक्तता (25ग्रा0/पौधा) की सिफारिश की गई है।

सल्फर:

इसकी कमी होने से युवा पत्तियों की दिखावट पीली और सफेद, पत्ती मार्जिन पर परिगलित पैच, नसों का मोटा होना, विकास अवरुद्ध और गुच्छे छोटे और बंद हो जाते हैं।

नियंत्रण : सिंचाई द्वारा अपनाई गई जटिल उर्वरक के अनुप्रयोग (20: 20: 0: 15) 20 ग्राम/पौधा के हिसाब से सिफारिश की गई है।

मैंगनीज:

दूसरी या तीसरी सबसे छोटी पत्ती के लीफ मार्जिन पर संकीर्ण हरी बढत दिखाई देती है जो आगे चलकर मिडरीब की दिशा में मुख्य नसों के साथ फैल जाती है। हालांकि, कॉमप टूथ एपीरियन्स देते हुए इन्टरवेनियल एरिया हरा ही रहता है।

नियंत्रण : पत्तियों पर मैंगनीज सल्फेट (0.5%) छिड़काव की सिफारिश की है।

जस्ता:

उच्च पीएच सहित लाइमड मिट्टी या मिट्टी में ज्यादातर इसके लक्षण दिखाई देते हैं। युवा पत्तियां आकार में छोटी और दिखने में चाकू जैसी बन जाती है। फरलिंग पत्ती में इसके नीचे की साइड पर एंथोसायनिन रंजकता की अधिक मात्रा दिखाई देती है। फहराया पत्ती बारी-बारी से क्लोरोटिक और हरे रंग के बैंड की हो जाती है। फल हल्का हरा, विकृत, छोटा और पतला होता है।

नियंत्रण : पत्तियों पर जिंक सल्फेट (0.5%) छिड़काव की सिफारिश की है।

लोहा:

छोटी पत्तियां पीली या सफेद हो जाती है।

नियंत्रण : पत्तियों पर यूरिया (1%) सहित आयरन सल्फेट (0.5%) छिड़काव की सिफारिश की है।

तांबा:

युवा और पुरानी पत्तियां दोनों में आधार की ओर क्लोरज़ और वक्र के लक्षण दिखाई देते हैं जो पौधे को एक छाता की तरह बना देता है।

नियंत्रण: पत्तियों पर कॉपर सल्फेट (0.5%) छिड़काव की सिफारिश की है।

बोरान:

इसकी कमी होने से पत्ती एरिया का कम होना, पत्तियों के कर्लिंग, लामिना विरूपण, सफेद धारियों का प्रकटन और युवा पत्तियों के लामिना पर नसों का सीधा खडा होना, गौण नसों का स्थूलन तथा जड और फल गठन का निषेध शामिल है

नियंत्रण: पौधे की जड़ क्षेत्र के आसपास मिट्टी में बोरेक्स नमक (25 ग्राम / पौधा) के उपयोग की सिफारिश की है।